सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
मूल्य ₹ 3/-
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 137 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 23 जून, 2026

किसी कंपनी के लिए एक ब्रांड एक व्यक्ति के लिए उसकी साख की तरह है। आप कठिन चीजों को करने का प्रयास करके साख पाते हैं।

-जेफ बेजोस

मानव सुथार ने काउंटी चैंपियनशिप में... 7 | महाराष्ट्र में अभी और चलेगा सियासी... 3 | देश एवं प्रदेश की डबल इंजन सरकार... 2

हत्यारा सरकारी सिस्टम!
युवाओं की मौत का जिम्मेदार कौन?

» लखनऊ अग्निकांड मौत का लाइसेंस किसने दिया?
» जिस भवन में लगी आग उसके ध्वस्तीकरण के थे आदेश बाद में एलडीए ने वापस लिये
» सूरत से लखनऊ तक की एक ही कहानी
» रिश्वत के दम पर खड़े मौत के महल
» हर हादसे के बाद जागती है सरकार और फिर सो जाता है जमीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। ब्रेकिंग न्यूज का लाल पट्टा फिर चमका एक बार फिर कैमरे दौड़े अफसर फिर पहुंचे नेताओं ने फिर दुख जताया जांच के आदेश फिर जारी हुए। 15 मासूम बच्चों की अधजली कॉपियां पिघली हुई पानी की बोतलें और राख में बदले सपने फिर एक सरकारी फाइल का हिस्सा बन गए। सवाल यह नहीं है कि लखनऊ में आग कैसे लगी। सवाल यह है कि आखिर वह इमारत खड़ी कैसे थी?

सवाल यह है कि बच्चों को पढ़ाने के नाम पर मौत का अड्डा चलाने की अनुमति किसने दी? सवाल यह है कि फायर एनओसी के बिना सुरक्षा मानकों के बिना इमरजेंसी एक्जिट के बिना नियम कानून को दरकिनार कर लगी आग से जो 15 मासूम सपने खाक बन गये हैं उनका जिम्मेदार कौन है और इन लोगों की पीठ पर किसका हाथ है? और सबसे बड़ा सवाल यह है कि इन 15 बच्चों की मौत का हत्यारा कौन है? वह आग जिसने बच्चों को जिंदा निगल लिया? वह मालिक जिसने नियमों को कूड़ेदान में फेंक दिया? वह अधिकारी जिसने रिश्वत लेकर आंखें बंद कर लीं या फिर वह नेता जिसने संरक्षण दिया या फिर हम सब जो हर हादसे के बाद दो मिनट दुखी होकर अगले दिन सब भूल जाते हैं?

15 मासूम बच्चों की अधजली कॉपियां पिघली हुई पानी की बोतलें और राख में बदले सपने फिर एक सरकारी फाइल का हिस्सा बन गए।

हादसे में जान गंवाने वालों की सूची
पांच घायल, दो का जारी है इलाज

इस हादसे में लखनऊ के जानकीपुरम थाना गुडंबा के शाहजान, आलमबाग के सुखमनी सिंह, सीतापुर के आदित्य श्रीवास्तव, ज्वानिल चक्रवर्ती, गुडंबा के सागर पंत, हजरतगंज के नीलेश, कानपुर नगर के सत्यम, भविष्य, घायल हो गए हैं, जिनका इलाज केजीएमयू में चल रहा है। हादसे के बाद सरकार की ओर से एक्शन तेज कर दिया गया है। इमारत के मालिक समेत 4 नामजद और अज्ञात आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

बीएनएस की 105, 110, 125 और 3(5) की गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। हादसे के बाद प्रशासन की ओर से लापरवाही की जांच शुरू की गई और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी गई है। अग्निकांड में चार आरोपी निलंबित कर दिए गए हैं और तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। निलंबित किए गए अधिकारियों में गौरव कुमार, एक्सईएन कलेक्शन जानकीपुरम, कमलेन्द्र कुमार सिंह, एफएसएसओ इंदिरा नगर, अनिल कुमार, सहायक अभियंता (एई) और प्रमोद पांडे, जूनियर इंजीनियर (जेई) शामिल हैं। मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद इन अधिकारियों पर तत्काल कार्रवाई की गई। पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार आरोपियों में रामकृष्ण उपाध्याय (43 वर्ष), वीरेंद्र प्रसाद शुक्ला (62 वर्ष), और तुषांक कृष्णा जायसवाल (31 वर्ष) शामिल हैं।

चिनहट की ज्योति, शहादतगंज के अब्दुल रहमान, न्यू अलीपुर कोलकाता की अनामिका सामंत, बाराबंकी के मो. अम्मार, उतरेठिया लखनऊ के अनुच्छा और दक्षिणी 24 परगना, बंगाल की सोमाल्या की जान चली गई। वहीं, इस हादसे में अलीगंज, लखनऊ की रहने वाली लवप्रीत और ऐशबाग, लखनऊ के रहने वाले जयंत गंभीर रूप से

इमारत नहीं जली, तमाम दावों को भी किया राख

लखनऊ की इस भयावह त्रासदी ने सिर्फ एक इमारत नहीं जलाई। इसने शासन-प्रशासन के उन तमाम दावों को भी राख कर दिया है जिनमें स्मार्ट सिटी, सुरक्षित शहर और सुशासन की बातें की जाती हैं। क्योंकि सच यह है कि भारत के लगभग हर बड़े शहर में हजारों ऐसी इमारतें खड़ी हैं जिनकी दीवारों पर रंग रोगन भले चमकता हो लेकिन भीतर मौत अपने अवसर का इंतजार करती रहती है। कुछ वर्ष पहले गुजरात के सूरत में कोचिंग सेंटर में लगी आग ने पूरे देश को झकझोर दिया था। बच्चे छत से कूदे थे, चीखे थे, जलते हुए सपनों ने आसमान तक धुआं भेजा था। उसके बाद कसम खाई गई थी कि ऐसा दोबारा नहीं होगा। लेकिन हुआ। दिल्ली में होटल जला लोग मरे। राजधानी में अस्पतालों में आग लगी मरीज मरे। बेसमेंट में पानी भरा छात्र डूब गए। लखनऊ के होटल में आग लगी यात्री मारे गए। अब फिर बच्चों की चिताएं जल रही हैं। हर बार एक ही पटकथा चलती है हादसा हंगामा और जांच निलंबन मुआवजा और फिर खामोशी।

15 मौतों के बाद कटघरे में एलडीए की भूमिका

सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार आग लगने वाला भवन मूल रूप से वर्ष 1980 में किराया-क्रय योजना के तहत विजय कुमार को आवंटित किया गया था। बाद में 2005 में यह संपत्ति विजय कुमार और उनकी पत्नी उषा के नाम दर्ज हुई तथा वर्ष 2013 में इसे वीरेंद्र प्रताप शुक्ला और सुरेंद्र प्रताप शुक्ला को बेच दिया गया। करीब 1992 वर्गफुट क्षेत्रफल वाली इस इमारत का मानचित्र 20 अगस्त 2014 को आवासीय उपयोग के लिए स्वीकृत किया गया था। लेकिन इसके बाद भवन में कथित रूप से अनाधिकृत निर्माण किए जाने की शिकायतें सामने आईं। जांच के उपरांत लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) ने वर्ष 2016 में वीरेंद्र प्रताप शुक्ला के खिलाफ मुकदमा संख्या-08/2016 दर्ज कराया। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जांच के बाद 10 मई 2016 को एलडीए ने अवैध निर्माण के विरुद्ध ध्वस्तीकरण का आदेश पारित कर दिया था। हालांकि हैरानी की बात यह है कि महज दो माह के भीतर, 5 जुलाई 2016 को उसी आदेश को निरस्त भी कर दिया गया। आखिर किन परिस्थितियों में ध्वस्तीकरण का आदेश वापस लिया गया, यह अब सबसे बड़ा सवाल बनकर उभर रहा है। सोमवार को हुए भीषण अग्निकांड के बाद पुराने दस्तावेज और एलडीए की कार्यवाही फिर जांच के घेरे में हैं। यदि भवन में अनियमितताएं थीं और उन्हें लेकर कार्रवाई भी हुई थी, तो फिर अंतिम निष्कर्ष क्या निकला? क्या सभी खामियां दूर कर दी गई थीं या फाइलों में ही मामला दब गया? 15 मौतों के बाद अब इन सवालों के जवाब तलाशना जांच एजेंसियों और प्रशासन दोनों के लिए बड़ी चुनौती बन गया है।

बोले- पूर्व सीएम अखिलेश के चाचा

भाजपा झूठों की पार्टी है: शिवपाल

» सपा और सैफई परिवार एकजुट

» हम सभी वर्ग और दलों को लेकर आगे बढ़ रहे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओमप्रकाश राजभर के एक्स अकाउंट पर राम गोपाल यादव के अमित शाह से मिलने और सपा के टूटने वाले पोस्ट ने सियासी घमासान अब भी जारी है। ओम प्रकाश राजभर के पोस्ट पर सपा के वरिष्ठ नेता शिवपाल सिंह यादव ने बीजेपी पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा झूठों की पार्टी है। सपा और सैफई परिवार एकजुट है। इस बयानों से कुछ बिगड़ने वाला नहीं है।

सपा के वरिष्ठ नेता शिवपाल यादव ने कहा कि हम सभी वर्ग और दलों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने सोशल मीडिया पर बयान जारी कर कहा था कि प्रो. रामगोपाल ने अमित शाह को चिट्ठी लिखी है, जिसमें बताया गया है कि कई नेता भाजपा में शामिल होने को तैयार हैं। बुधवार को पार्टी के प्रदेश सचिव आशीष चौबे के निजी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए शिवपाल यादव कानपुर पहुंचे थे।

यूपी की जनता सबका जवाब देगी

शिवपाल सिंह यादव का सपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार तरीके से स्वागत किया। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा भ्रष्टाचार वाली पार्टी है। इन लोगों ने राम मंदिर तक को नहीं छोड़ा। इनके लोग उसे भी लूट ले गए। इसका जवाब उन्हें जनता देगी।

ओवैसी भाजपा की मदद करने वाले

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के लिए कहा कि वह विधानसभा और लोकसभा चुनावों में अपनी ही सीटों पर समीकरण नहीं बना पाए और हार गए। शिवपाल ने दावा किया किया कि सपा सभी वर्गों को एकजुट कर यूपी का आगामी चुनाव जीतेगी। अखिलेश के नेतृत्व में सरकार बनाएंगे। ओवैसी को लेकर कहा कि है उनकी पार्टी आंतरिक रूप से भाजपा की मदद करने वाली पार्टी है।

एसआईटी ने शासन को सौंपी रिपोर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । राम मंदिर के चढ़ावा चोरी प्रकरण की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट एसआईटी ने मंगलवार सुबह अपर मुख्य सचिव गृह संजय प्रसाद को सौंप दी है। रिपोर्ट में चढ़ावा चोरी से लेकर कमीशनखोरी के खेल के सुबूत हैं। मंदिर में कर्मचारियों की नियुक्ति, गणना प्रक्रिया में भी बड़े हेरफेर की आशंका एसआईटी ने जताई है। उससे संबंधित तमाम साक्ष्य जुटाए हैं। गवाहों का भी जिक्र रिपोर्ट में किया गया है।

एसआईटी में शामिल लखनऊ मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत, लखनऊ आईजी रेंज किरन एस और विशेष सचिव वित्त नील रतन सुबह करीब 11 बजे शासन पहुंचे। तीनों अधिकारियों ने गोपनीय जांच रिपोर्ट संजय प्रसाद को दी। अब ये रिपोर्ट मुख्यमंत्री के सामने रखी जाएगी। रिपोर्ट में ट्रस्ट के पदाधिकारियों पर सबसे बड़ा सवाल उठाया गया है। कुछ की भूमिका भी उजागर की गई है। अंदेशा जताया गया है कि वह हेरफेर में शामिल रहे हैं। वहीं कुछ पदाधिकारियों को लापरवाही का दोषी पाया गया। जिनकी निगरानी में चढ़ावा चोरी हुआ। फिलहाल मामले में सबसे अधिक जो पदाधिकारी सवालों के घेरे में हैं, उनमें ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, अनिल मिश्रा व निर्माण सहायक गोपाल राव का नाम शामिल है।

देश एवं प्रदेश की डबल इंजन सरकार संवेदनहीन : अजय राय

» प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने लखनऊ समेत कई हादसों को लेकर भाजपा को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय ने कहा कि जिस प्रकार दु:ख की इस घड़ी में देश एवं प्रदेश की डबल इंजन सरकार सहित प्रशासन का रवैया संवेदनहीन बना हुआ है। हमारे देश के नौजवान पूरे विश्व के हर देश में विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे हैं तब उनकी सुरक्षा, सम्मान और संकट की घड़ी में सरकार को उनके परिवारों के साथ खड़ा होना सरकार की पूरी जिम्मेदारी है जिससे भाजपा की केन्द्र व प्रदेश सरकार पीछे भाग रही है।

उन्होने कहा कि स्व. शिवानंद चौरसिया के परिवार को न्याय दिलाने के लिए कांग्रेस पार्टी संकल्पित है। लखनऊ के पुरनिया, अलीगंज स्थित एक कोचिंग सेन्टर में हुए हृदयविदारक भीषण अग्निकांड में 14 मासूम छात्र-छात्राओं की जिंदा जलकर हुई दर्दनाक मृत्यु की घटना पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है एवं शोक संवेदना व्यक्त करते हुए शोक संतप्त परिजनों को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है।

चौरसिया के परिजनों से मिले

जनपद देवरिया के सुरौली गांव निवासी स्व. शिवानन्द चौरसिया की समुद्री ईंधन मालवाहक जहाज पर अमेरिकी सैन्य हमले में ओमान तट पर 10 जून को हुई दु:खद मृत्यु पर केन्द्र एवं प्रदेश सरकार व स्थानीय प्रशासन की उदासीनता के विरोध में स्व0 शिवानन्द चौरसिया के परिवार को न्याय दिलाने के लिए कांग्रेसजनों द्वारा न्याय सत्याग्रह विगत 19 जून से देवरिया के सुभाष चौक पर चलाया जा रहा था, जिसमें आज प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय-पूर्व मंत्री पहुंचे एवं स्व. शिवानंद चौरसिया को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होने धरने में बैठे लोगों से मिलकर शिवानन्द चौरसिया के परिवार को न्याय दिलाये जाने का आश्वासन दिया एवं धरना समाप्त कराया। धरने के माध्यम से कांग्रेसजनों ने मांग की है कि शहीद शिवानंद चौरसिया के परिवार को तत्काल एक करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान किया जाए। शहीद शिवानंद चौरसिया के बच्चों की निःशुल्क सम्पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कराई जाए, स्व. शिवानंद चौरसिया को शहीद का दर्जा दिया जाए एवं उनके परिवार के एक आश्रित सदस्य को सरकारी नौकरी प्रदान की जाए।

ममता ने बागी गुट को फंसाया

» टीएमसी की नई वर्किंग कमेटी बनाई

» चिट्ठी लेकर चुनाव आयोग तक पहुंची पूर्व सीएम

» टीएमसी का अध्यक्ष बनने का दावा किया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस के बागी नेताओं ने नई वर्किंग कमेटी बनाकर ममता बनाकर अध्यक्ष पद से हटा दिया, उनकी जगह अरूप रॉय को नया अध्यक्ष चुना गया। इसके बाद दीदी ने बड़ा खेल करते हुए टीएमसी की नई वर्किंग कमेटी बनाई और उसकी चिट्ठी लेकर चुनाव आयोग तक पहुंच गईं। इसमें ममता बनर्जी को टीएमसी का अध्यक्ष बताया गया है।

ममता गुट की चिट्ठी के मुताबिक, सुब्रता बख्शी को उपाध्यक्ष, अभिषेक बनर्जी को राष्ट्रीय महासचिव और लोकसभा में नेता, डेरेक ओ ब्रायन को संयुक्त सचिव और राज्यसभा में नेता, डोला सेना को संयुक्त सचिव और शुभाशीष चक्रवर्ती को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। इनके अलावा कार्यसमिति में सोहनदेब चट्टोपाध्याय को पश्चिम बंगाल विधानसभा में नेता, बालू चिक बराइक को सदस्य, मुकुल संगमा, बैसनो चट्टोपाध्याय बीरवाहा हंसदा, कल्याण बनर्जी, सौगत रॉय, नदीमुल हक, मदन मित्रा, बिमान बनर्जी, महुआ मोइत्रा और कुणाल घोष को भी जिम्मेदारी सौंपी गई है। रितब्रता बनर्जी के नेतृत्व वाले गुट ने सोमवार को विधायक अरूप रॉय को पार्टी का अध्यक्ष चुना।

भाजपा को हार का डर, इसलिए टाले जा रहे राजस्थान में पंचायत चुनाव : गहलोत

» पूर्व सीएम ने मुख्यमंत्री की चौपाल पर उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जालौर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश की भाजपा सरकार, पंचायत चुनाव, कानून व्यवस्था, लोकतंत्र और कई जनहित मुद्दों पर सरकार को घेरा। गहलोत जालौर दौरे पर पहुंचे। यहां उन्होंने राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री एवं निराकरण समिति के अध्यक्ष पुखराज पाराशर के निवास पर पहुंचकर उनके पिता के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की।

इसके बाद अशोक गहलोत ने प्रदेश की भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने मुख्यमंत्री की चौपाल व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा कि असली चौपाल का मतलब गांव के आम लोगों की समस्याएं सुनना और मौके पर समाधान करना होता है, लेकिन वर्तमान में केवल चुनिंदा लोगों को बुलाकर औपचारिक कार्यक्रम किए जा रहे हैं। यदि सीएम वास्तव में गांवों की समस्याएं सुनें तो प्रदेश का भला हो सकता है। निकाय और पंचायत चुनावों को लेकर गहलोत ने कहा कि संविधान के तहत समय पर चुनाव करवाना सरकार की जिम्मेदारी है, लेकिन वर्तमान सरकार जानबूझकर चुनाव टाल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा को पंचायत और निकाय चुनावों में हार का डर सता रहा है, इसलिए अदालतों के निर्देशों के बावजूद चुनाव नहीं कराए जा रहे। उन्होंने कहा कि संविधान की अवहेलना लोकतंत्र के लिए खतरनाक संकेत है।

कानून व्यवस्था को लेकर भजन सरकार पर हमला

प्रदेश में बढ़ते अपराधों को लेकर भी पूर्व मुख्यमंत्री ने सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि राजस्थान में हत्या, बलात्कार और अन्य गंभीर अपराध लगातार बढ़ रहे हैं, लेकिन सरकार पूरी तरह निष्क्रिय नजर आ रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार में बैठे लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर कर रहे हैं और विरोध प्रदर्शन करने वालों पर मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में अभी और चलेगा सियासी संग्राम

शिवसेना की स्थापना दिवस पर चालू आहे रार

एकनाथ व उद्धव ठाकरे में वार-पलटवार

» एनसीपी-पवार गुट में सुनाई दे रहा टूट का स्वर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में शिवसेना यूबीटी में टूट के बीच और भी सियासी घमासान जारी है। जहां बालासाहब ठाकरे की विरासत पर अपने-अपने दावे को लेकर वार-पलटवार जारी है। दरअसल शिवसेना की स्थापना दिवस के अवसर पर एकनाथ शिंदे व उद्धव ठाकरे में ठन गई है। दोनों अपने-अपने दावें कर रह हैं। इसबीच उद्धव ठाकरे ने बागियों को कारण बताओं नोटिस जारी कर दिया है। उधर सांसद संजय राउत का बागियों पर आक्रमक रुख अब भी बना हुआ है उन्होंने उनकों कुत्ते से भी बदतर बता दिया।

इन सब उठापटक के बीच ये भी चर्चा हो रही है शरद पवार की एनसीपी भी टूट सकती है। इन सब घटनाचक्र के बीच भाजपा पर विपक्ष का हमला भी तीखा हो गया है। महाराष्ट्र में एक तरफ उद्धव ठाकरे अपने कार्यकर्ताओं को पार्टी के साथ बनाये रखने की कोशिश में भावनात्मक दांव खेल रहे हैं, तो दूसरी तरफ एकनाथ शिंदे ताकत, सत्ता और संगठन के दम पर ठाकरे खेमे को लगातार चुनौती दे रहे हैं। महाराष्ट्र की राजनीति में एक बार फिर शिवसेना के भीतर उठी बगावत ने ऐसा तूफान खड़ा कर दिया है, जिसने ठाकरे बनाम शिंदे की जंग को और ज्यादा विस्फोटक बना दिया है। मुंबई में शिवसेना स्थापना दिवस के मंच से उद्धव ठाकरे ने भावुक अंदाज में पार्टी कार्यकर्ताओं के सामने अपनी पीड़ा रखी। उन्होंने साफ कहा कि अगर शिवसैनिकों का भरोसा उन पर नहीं रहा तो वह इसी वक्त पार्टी प्रमुख का पद छोड़ने को तैयार हैं, लेकिन शिवसेना को चोरों और लुटेरों के हाथों में नहीं जाने देंगे। उद्धव का यह बयान सिर्फ भावुक अपील नहीं था, बल्कि उस राजनीतिक भूचाल की गूंज थी जिसने एक बार फिर ठाकरे खेमे की नींद उड़ा दी है। दरअसल संकट की असली वजह वही छह सांसद हैं जिन्होंने हाल ही में दिल्ली में हुई शिवसेना संसदीय दल की बैठक से दूरी बना ली। इन सांसदों की गैरमौजूदगी ने यह अटकलें तेज कर दीं कि वे जल्द ही सत्तारुढ़ गठबंधन का हिस्सा बन सकते हैं। इसी को लेकर अब महाराष्ट्र की राजनीति में ऑपरेशन टाइगर की चर्चा जोर पकड़ रही है। माना जा रहा है कि ठाकरे गुट में एक और बड़ी सेंध लग सकती है।

साधारण कार्यकर्ता आगे बढ़कर शिवसेना की कमान संभाले : उद्धव ठाकरे

उद्धव ठाकरे ने मंच से साफ कहा कि उन्हें खुशी होगी अगर पार्टी का कोई साधारण कार्यकर्ता आगे बढ़कर शिवसेना की कमान संभाले, लेकिन वह कभी यह बर्दाश्त नहीं करेंगे कि पार्टी पर कब्जा उन लोगों का हो जाए जिन्होंने विश्वासघात किया है। उन्होंने अपने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने और विधान परिषद सदस्यता जारी नहीं रखने के फैसले का भी बचाव किया। उद्धव ने कहा कि वह नहीं चाहते कि कोई शिवसैनिक उन पर उंगली उठाए कि सत्ता बचाने के लिए उन्होंने सिद्धांत बेच दिए।

कुछ लोग पिछले कई दिनों से भौंक रहे हैं, लेकिन बाघ हमेशा अकेला चलता है : एकनाथ

लेकिन इसी बीच दूसरी तरफ एकनाथ शिंदे ने ऐसा हमला बोला जिसने ठाकरे खेमे को भीतर तक झकझोर दिया। शिंदे ने अपने कार्यकर्ताओं के बीच गरजते हुए कहा कि कुछ लोग पिछले कई दिनों से भौंक रहे हैं, लेकिन बाघ हमेशा अकेला चलता है। शिंदे का यह बयान सीधे उद्धव ठाकरे पर हमला माना जा रहा है। इतना ही नहीं, उन्होंने चेतावनी भरे अंदाज में कहा कि अभी तो सिर्फ ट्रेलर दिखा है, पूरी फिल्म बाकी है। इस एक लाइन ने महाराष्ट्र की राजनीति में सनसनी फैला दी है, क्योंकि इसे ठाकरे खेमे में और बड़ी टूट की खुली चेतावनी माना जा रहा है।

शिंदे ने की मोदी की जमकर तारीफ

शिंदे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि बालासाहेब ठाकरे आज होते तो मोदी के काम की सराहना करते। उन्होंने महायुति गठबंधन को मजबूत बताते हुए कहा कि उनके और देवेंद्र फडणवीस के बीच किसी तरह का मतभेद नहीं है। शिंदे ने यह भी दावा कर दिया कि विधान परिषद चुनाव में विपक्ष एक भी सीट नहीं जीत पाएगा। वहीं एकनाथ शिंदे ने भी कोई मौका नहीं छोड़ा। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि बाघ की खाल ओढ़ लेने से कोई भेड़िया बाघ नहीं बन जाता। शिंदे ने साफ कहा कि उद्धव ठाकरे को आत्ममंथन करना चाहिए कि आखिर नेता उनकी पार्टी क्यों छोड़ रहे हैं? उन्होंने दावा किया कि बालासाहेब ठाकरे के सपने को उन्होंने पूरा किया और शिवसेना को गांव-गांव तक पहुंचाया।

कांग्रेस में विलय की अटकलों को उद्धव ने किया खारिज

उद्धव ठाकरे ने इस दौरान कांग्रेस में विलय की अटकलों को भी खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि जब शिवसेना ने तीस साल तक भाजपा के साथ रहकर भी खुद को उसमें विलीन नहीं किया तो कांग्रेस में जाने का सवाल ही नहीं उठता। उद्धव ने दावा किया कि उन्होंने पूरे महाराष्ट्र का दौरा किया और पार्टी कार्यकर्ताओं से लगातार संवाद बनाए रखा, तभी चुनावों में पार्टी को सफलता मिली।

पवार ने बुलाई बैठक

खबरों के मुताबिक, इसी वजह से शरद पवार ने सांसदों की एक बैठक बुलाई है। लोकल मीडिया की खबरों के मुताबिक, यह बैठक अगले दो दिनों में हो सकती है। इसका मकसद मौजूदा राजनीतिक हालात का जायजा लेना और पार्टी सांसदों से सीधे बातचीत करना है। हालांकि, शिवसेना (यूबीटी) में चल रही मौजूदा हलचल पर पवार ने खुद अभी तक खुलकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। लेकिन पवार के पोते और विधायक रोहित पवार ने एक्स पर उन सांसदों की आलोचना की है। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में उन्होंने कहा कि नेताओं का ध्यान बेरोजगारी, किसानों की परेशानी, पानी की कमी और महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर होना चाहिए। उन्होंने सांसदों और विधायकों की खरीद-फरोख्त के बढ़ते चलन की भी आलोचना की और कहा कि जो नेता जनता का भरोसा तोड़ते हैं, उन्हें वोटर्स को लोकतांत्रिक तरीके से सबक सिखाना चाहिए।

बेशर्म, एहसान फरामोश और भ्रष्ट है बागी : आदित्य ठाकरे

आदित्य ठाकरे ने भी बागी नेताओं पर जबरदस्त हमला बोला। उन्होंने उन्हें बेशर्म, एहसान फरामोश और भ्रष्ट करार देते हुए कहा कि जिन लोगों को जनता ने जिताया, वही अब जनता की पीठ में छुरा घोंप रहे हैं। ठाकरे परिवार का यह गुस्सा दिखा रहा है कि पार्टी के भीतर बगावत अब सिर्फ राजनीतिक संकट नहीं, बल्कि अस्तित्व की लड़ाई बन चुकी है। उधर, अपने भाषण में उद्धव ठाकरे ने इन बागी सांसदों पर अप्रत्यक्ष हमला करते हुए जनता से माफी मांगी। उन्होंने कहा कि जिन मतदाताओं ने इन सांसदों को जिताया था, उनसे वह क्षमा चाहते हैं क्योंकि वे अब दल बदल की राह पर हैं। यह बयान साफ दिखाता है कि ठाकरे अब विश्वासघात की चोट को खुलकर जनता के सामने रख रहे हैं।

एनसीपी शरद पवार में बड़ी सेंधमारी की तैयारी? 5 एमपी छोड़ेंगे साथ

एनसीपी विधायक धर्मराव अत्राम ने दावा किया है कि शरद पवार की एनसीपी (एसपी) के पांच लोकसभा सांसद 12 दिसंबर तक अजित पवार गुट में शामिल हो सकते हैं, जिसके लिए दल-बदल विरोधी कानून के तहत 6 सांसदों का समर्थन आवश्यक होगा। सुनेत्रा पवार और पार्थ पवार के अमित शाह से दिल्ली में मिलने के बाद इन अटकलों ने जोर पकड़ा है, जिससे महाराष्ट्र की राजनीति में नए समीकरण बनने की संभावना है। अत्राम ने कहा कि हर कोई विकास कार्य करके वापस आना चाहता है। कम से कम पांच लोकसभा सांसद 12 दिसंबर तक हमारे साथ आ जाएंगे। लोगों को सुनेत्रा पवार के नेतृत्व पर भरोसा है और उन्हें एहसास हो गया है कि अपने निर्वाचन क्षेत्रों में विकास लाने के लिए उन्हें हमारे साथ आना होगा। एकनाथ शिंदे सरकार में पूर्व मंत्री रहे अत्राम, गढ़चिरौली जिले से आते हैं। उनके ये बयान डिप्टी सीएम और एनसीपी अध्यक्ष अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार और राज्यसभा सांसद पार्थ पवार की नई दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के एक दिन बाद आए हैं। हालांकि मुलाकात की जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है, लेकिन पार्टी सूत्रों का कहना है कि NCP महाराष्ट्र में वित्त विभाग चाहती है और यह मुलाकात नेतृत्व के साथ बातचीत से जुड़ी हो सकती है।

संख्या मायने रखती है एनसीपी-एसपी के नौ सांसद

अभी एनसीपी-एसपी के नौ सांसद हैं - आठ लोकसभा में और एक राज्यसभा में। दल-बदल विरोधी नियमों के तहत, अगर संसदीय पार्टी में कोई बंटवारा होता है, तो अयोग्य घोषित होने से बचने के लिए कम से कम दो-तिहाई चुने हुए सांसदों का समर्थन जरूरी होगा। चूंकि एनसीपी-एसपी के आठ लोकसभा सांसद हैं, इसलिए कानूनी तौर पर अलग होने और किसी दूसरे गुट में शामिल होने के लिए कम से कम छह सांसदों की जरूरत होगी। पार्टी के लोकसभा सांसदों में सुप्रिया सुले, अमोल कोल्हे, बजरंग सोनवणे, नीलेश लंके, सुरेश म्हात्रे, अमर काले, भास्कर भागरे और धैर्यशील मोहिते-पाटिल शामिल हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

लोकतंत्र में बदले की सियासत ठीक नहीं

इन दिनों सत्ता से जुड़े लोगों की दबंगई की खबरें आना आम बात है। मप्र, राजस्थान, बंगाल से लेकर यूपी तक में लोगों को मारने, गाड़ियों से कुचलने की बाते हमेशा सुर्खियों में रहती है। दबंग इतने ताकतवर होते हैं कि पुलिस भी उनके सामने नतमस्तक होती है।

भारत में देखने को मिलता है कि जब कोई राजनीतिक पार्टी सत्ता प्राप्त कर लेती है तो उसके कार्यकर्ता उदंड हो जाते हैं। जैसे अभी हाल में बंगाल में देखने को मिला जहां भाजपा की बंपर की जीत हुई है। वहां पर उसके कार्यकर्ता टीएमसी के नेताओं पर अंडा व टमाटर फेंककर उनको परेशान कर रहे हैं। लोकतंत्र में ये बदले की सियासत ठीक नहीं है। विपक्ष की बात को भी सुनना जरूरी है। इन दिनों सत्ता से जुड़े लोगों की दबंगई की खबरें आना आम बात है। मप्र, राजस्थान, बंगाल से लेकर यूपी तक में लोगों को मारने, गाड़ियों से कुचलने की बाते हमेशा सुर्खियों में रहती है। दबंग इतने ताकतवर होते हैं कि पुलिस भी उनके सामने नतमस्तक होती है। राजनीति को सेवा का माध्यम कहा जाता रहा है, लेकिन आए दिन जनप्रतिनिधियों और उनके परिजनों के आचरण से जुड़ी घटनाएं बताती हैं कि सत्ता की चमक-दमक के आगे जनता उनके लिए कुछ भी नहीं है।

मध्य प्रदेश के पिछोर से आई एक घटना ऐसे ही कड़वे सच से जुड़ी है। भाजपा विधायक के पुत्र पर आरोप है कि उसने अपनी लग्जरी कार से कुछ लोगों को कुचलने की कोशिश की। वह भी सिर्फ इसलिए कि उसे सड़क पर रास्ता नहीं दिया गया। हैरत इस बात की है कि अपने पुत्र के इस कृत्य पर संयम और जिम्मेदारी दिखाने के बजाय माननीय ने कार्रवाई करने वाले आइपीएस अधिकारी को ही धमका डाला। राजनीति विशेषाधिकार का पासपोर्ट बनती जा रही है। यह कई नेताओं और उनके परिजनों के आचरण में साफ दिखता है। साथ ही यह भी कि कानून जैसे उनके लिए नहीं, बल्कि उनके अधीन है। सड़क पर आम नागरिक की तरह चलने का धैर्य भी अगर शहजादों में नहीं बचा, तो यह न केवल व्यक्तिगत विफलता है, बल्कि इसे राजनीतिक संस्कारों को ताक में रखने वाला कृत्य भी कहा जाएगा। यह सवाल सिर्फ एक विधायक या उनके पुत्र तक ही सीमित नहीं है। देश के अलग-अलग हिस्सों से ऐसी घटनाएं समय-समय पर सामने आती रही हैं- कहीं पुलिस को फोन पर धमकाया जाता है, कहीं सरकारी अमले को पहुंच का अहसास कराया जाता है। विडंबना यह भी है कि इस तरह के घटनाक्रम में वर्दी की भूमिका भी कठघरे में आती है। कुछ अफसर तो सत्ता के आगे इतने नतमस्तक हो जाते हैं कि वे अपने दायित्वों को भूल बैठते हैं। जी-हुजूरी और चापलूसी का यह चलन न केवल प्रशासनिक तंत्र को कमजोर करता है, बल्कि उन ईमानदार अधिकारियों का मनोबल भी तोड़ता है, जो नियमों के तहत काम करना चाहते है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

युद्धों का चेहरा बदलता अदना-सा ड्रोन

गुरबचन जगत

तेरहवीं सदी में इंग्लिश लॉन्गबो (एक किस्म का लंबा धनुष) खतरनाक हथियार के तौर पर उभरा। इसको 13वीं और 15वीं सदी के बीच इंग्लैंड की सैन्य ताकत के दबदबे का प्रतीक माना जाता है। मध्ययुगीन युद्धों में लड़ाई की तकनीक में भी यह एक बड़ा बदलाव लेकर आया-इंग्लैंड की सैन्य ताकत कवच धारी कुलीनों से हटकर आम लोगों से बने तीरंदाजों की भुजाओं में आ गई। यह बदलाव इतना अहम था कि एडवर्ड तृतीय ने शाही फरमान जारी किया '...प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति रविवार व छुट्टियों के दिन तीरंदाजी का अभ्यास करेगा, और अन्य सभी खेलों पर रोक होगी।' एजिनकोर्ट की लड़ाई (सन 1415) शायद इस शक्ति परिवर्तन की बेहतरीन मिसाल है, जिसमें लगभग 7,000 सैनिकों की (इनमें 5,000 तीरंदाज थे) की छोटी सी इंग्लिश सेना ने कवच से लैस घुड़सवार योद्धाओं वाली विशाल फ्रांसीसी सेना (जिसमें करीब 20,000 सैनिक थे) को हरा दिया।

लॉन्गबो ने आम लोगों को सैन्य ताकत का अहम हिस्सा बना दिया और व्यापार व कारीगरी की पूरी इकॉनोमी को आगे बढ़ाया। शेक्सपियर ने अपने नाटकों में, एजिनकोर्ट की लड़ाई से पहले किंग हेनरी पंचम के संवादों से इस बदलाव को अमर बना दिया 'हम कुछ लोग, चंद खुशकिस्मत लोग हैं, भाइयों से बना हमारा समूह है; जो कोई आज मेरे साथ अपना खून बहाएगा वह मेरा भाई होगा, चाहे वह कितने भी निम्न तबके से क्यों न हो, आज का दिन उसकी हैसियत ऊंचा उठाने वाला होगा।' वर्तमान में ड्रोन एक खतरनाक हथियार बन चुका है। यह आधुनिक युद्ध के तौर-तरीकों को बदल रहा है, जिसमें, कहीं छोटे देश भी महाशक्तियों की सैन्य ताकत का मुकाबला कर रहे और धूल चटा रहे हैं। यह होते हमने रूस-यूक्रेन युद्ध और अमेरिका-इस्राइल-ईरान संघर्ष में देखा है। गोलियथ (विशालकाय योद्धा) का मुकाबला डेविड इसलिए कर पाया कि उसने पास नए मारक हथियार के रूप में गुलेल थी, आज वही गुलेल ड्रोन का रूप धर चुकी है।

सस्ते और बड़े पैमाने पर बनने वाले ड्रोनों ने विशाल सेनाओं व जंगी बेड़ों का मुकाबला करने में कामयाबी हासिल की है। आइए रूस का उदाहरण लें। रूस लंबे समय से यूक्रेन पर हमला करने और कब्जे में लेने की योजना बना रहा था। निरंतर अपना विस्तार कर रहे नाटो ने उसे ऐसा करने का बहाना दे दिया; नाटो ने यूक्रेन को सदस्य बनाकर, रूसी

सीमाओं तक पहुंचकर उसके लिए खतरनाक बनना चाहा। रूसियों ने 'विशेष सैन्य अभियान' शुरू किया, जो कि दरअसल एक पूर्ण-स्तरीय हमला था। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की थी कि कुछ ही दिनों में यह अभियान पूरा हो जाएगा। टीवी पर बख्तरबंद गाड़ियों के काफिले यूक्रेन में घुसते देखे गए। हालांकि, उन्होंने दुश्मन को कमतर आंकने की बड़ी गलती की। यूक्रेन को अमेरिका और नाटो का समर्थन मिला, खासकर हथियार, गोला-बारूद और खुफिया जानकारी के मामले में। धीरे-धीरे रूसी सेना फंसती गई। यूक्रेन ने शनैः-शनैः विशाल रूसी सेना की बढ़त रोक दी। 'द हिंदू' के हालिया लेख में कहा गया : 'यूक्रेन ने आम ड्रोन, जो आम लोगों के इस्तेमाल के लिए बनाए गए थे, को तेजी से जासूसी और हमलावर प्रणाली में बदल दिया। जो फौरन निर्णायक युद्ध क्षमता में बदल गई, क्योंकि छोटे क्वाडकॉप्टर और फर्स्ट पर्सन व्यू ड्रोन को हथियारों से लैस कर कम लागत वाली किंतु सटीक निशाना लगाने वाली हथियार प्रणाली के तौर पर प्रयोग किया।' ड्रोन तबाही मचाने वाले सक्रिय हथियार बन गए और 2024 तक, यूक्रेनी सेना की लगभग हर टुकड़ी उससे लैस हो गई। तब से ड्रोन का विकास बहुत तेजी से हुआ। ड्रोन ने युद्ध की दिशा-दशा बदल दी; बचाव की मुद्रा में रहने के बजाय, यूक्रेन अब रूस के गहरे अंदर तक हमले कर रहा। 'तीन दिन' का अभियान ऐसे युद्ध में बदल गया है, जो अब पांचवें साल में है। इस संदर्भ में ईरान के साथ अमेरिका-इस्राइल युद्ध का जिक्र करना भी जरूरी है। अमेरिकियों ने खाड़ी क्षेत्र में विशाल सैन्य बेड़े भेजे, सैनिक जमा किए और अपनी ताकतवर वायु सेना को तैनात किया, साथ ही ईरान से बिना शर्त आत्मसमर्पण की मांग की।

इसके बाद, इस्राइल संग मिलकर हवाई हमले किए और ईरान के आध्यात्मिक, सैन्य और खुफिया नेतृत्व को खत्म कर दिया, और ईरान को दुनिया के नक्शे से मिटाने तक की धमकी दी। अमेरिका ने ईरानियों की सभ्यतागत जीवट और इतिहास, तथा लाखों ड्रोन और मिसाइलों बनाने में उनकी तरक्की, उनके दूसरे एवं तीसरे स्तर के उनके नेतृत्व, और रणनीतिक व सामरिक सूझबूझ को अनदेखा किया-अहंकार और गलतियों ने फिर एक महाशक्ति को मात दे दी। ईरानियों ने ड्रोन और मिसाइलों से खाड़ी देशों में अमेरिकी ठिकानों और अमेरिकी सहयोगियों के बुनियादी ढांचे पर हमले किए।

युवाओं को जीवटता से जीने की मिले सीख

विवेक शर्मा

आज देश के लाखों परिवार अपने बच्चों की सफलता के सपने कोचिंग संस्थानों के भरोसे बुन रहे हैं। डॉक्टर, इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी बनने की आकांक्षा में किशोर उम्र से ही बच्चे ऐसी प्रतिस्पर्धा में उतर जाते हैं, जहां हर परीक्षा भविष्य का फैसला और हर रैंक पहचान का पैमाना बन जाती है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा, सीमित अवसरों और सामाजिक अपेक्षाओं ने कोचिंग संस्कृति को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बना दिया है। लेकिन इस चमकदार सफलता के पीछे एक दूसरा सच भी छिपा है, जिसमें बढ़ता मानसिक दबाव, सिमटता बचपन और अंकों तक सीमित होती शिक्षा शामिल है। तो क्या हम युवाओं को जीवन के लिए शिक्षित कर रहे हैं या केवल परीक्षाओं के लिए तैयार कर रहे हैं? भारत दुनिया के सबसे अधिक युवाओं वाले देशों में शामिल है।

देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह स्थिति भारत को जनसांख्यिकीय लाभांश का अवसर देती है, लेकिन इसके साथ एक बड़ी चुनौती भी जुड़ी हुई है। हर वर्ष करोड़ों युवा उच्च शिक्षा और रोजगार के सीमित अवसरों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। वर्ष 2025 में जेईई मेन परीक्षा में करीब 15 लाख विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया, जबकि आईआईटी में सीटें लगभग 20 हजार हैं। इसी प्रकार सरकारी मेडिकल कॉलेजों की एक लाख से कम सीटों के लिए लगभग 25 लाख अभ्यर्थियों ने नीट यूजी परीक्षा दी। ये आंकड़े बताते हैं कि प्रतियोगिता अब केवल कठिन नहीं, बल्कि अत्यधिक तीव्र और तनावपूर्ण हो चुकी है। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार भारत का कोचिंग उद्योग 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक का हो चुका है। कोटा, दिल्ली, हैदराबाद और प्रयागराज जैसे शहर प्रमुख कोचिंग केंद्र बन गए हैं। हजारों विद्यार्थी घरों से दूर रहकर तैयारी करते हैं और अनेक परिवार अपनी बचत का बड़ा हिस्सा इस पर खर्च कर देते हैं। शिक्षा अब ऐसा निवेश बनती जा रही है, जिसके बदले सफलता की कोई निश्चित गारंटी नहीं होती। कोचिंग संस्थानों ने अनेक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन और प्रतिस्पर्धी माहौल उपलब्ध कराया है।

छोटे शहरों के कई छात्रों ने इनके माध्यम से राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में सफलता हासिल की है। लेकिन इसके साथ डमी एडमिशन जैसी प्रवृत्ति भी बढ़ी है। अनेक विद्यार्थी केवल औपचारिक रूप से स्कूलों में दाखिला ले लेते हैं और उनका अधिकांश समय कोचिंग संस्थानों में बीतता है। इससे खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों और व्यक्तित्व विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं। इस पूरी व्यवस्था का सबसे गंभीर असर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर दिखाई देता है। नियमित टेस्ट, रैंकिंग, प्रदर्शन की तुलना और लगातार बेहतर करने का दबाव बच्चों को मानसिक रूप से थका देता है। असफलता का भय उन्हें चिंता, तनाव और अवसाद की ओर धकेलता है। कई विद्यार्थियों को यह महसूस होने लगता है कि उनका पूरा भविष्य एक परीक्षा के परिणाम पर निर्भर है।

यही कारण है कि हाल के वर्षों में विद्यार्थियों की आत्महत्या की घटनाएं चिंता का विषय बनी हुई हैं। सफलता की यह दौड़ कई बार युवाओं के लिए असहनीय बोझ बन जाती है। हालांकि इस स्थिति के लिए केवल कोचिंग संस्थानों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। अभिभावकों और समाज की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। अधिकांश माता-पिता बच्चों का भविष्य सुरक्षित देखना चाहते हैं, लेकिन कई बार उनकी अपेक्षाएं अनजाने में दबाव का कारण बन जाती हैं। हमारे समाज में आज भी डॉक्टर, इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी बनने को ही सफलता का सबसे बड़ा पैमाना माना जाता है। परिणामस्वरूप अनेक विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमता के बजाय सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप करियर चुनने के लिए विवश हो जाते हैं। वास्तविकता यह है कि नई अर्थव्यवस्था ने अवसरों के अनेक नए द्वार खोले हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा, डिजिटल मीडिया और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में तेजी से संभावनाएं बढ़ रही हैं। युवाओं को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार करियर चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। कोचिंग संस्कृति का बढ़ता प्रभाव हमारी औपचारिक शिक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर प्रश्न खड़े करता है। यदि स्कूल विद्यार्थियों को मजबूत शैक्षणिक आधार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और तार्किक समझ प्रदान कर पा रहे होते, तो कोचिंग की आवश्यकता इतनी व्यापक नहीं होती।

स्कूलों में शिक्षकों की कमी, रटने पर आधारित शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान की उपेक्षा ने इस निर्भरता को बढ़ाया है। नई शिक्षा नीति ने शिक्षा को अधिक कौशल आधारित और बहुआयामी बनाने की दिशा में पहल की है, लेकिन उसके प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है। आज जरूरत शिक्षा व्यवस्था में संतुलन स्थापित करने में है। स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार, प्रभावी करियर परामर्श, विद्यार्थियों के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता, अभिभावकों में जागरूकता और सफलता की व्यापक परिभाषा विकसित करना समय की मांग है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ऐसे आत्मविश्वासी, संवेदनशील और रचनात्मक नागरिक तैयार करना है जो बदलती दुनिया की चुनौतियों का सामना कर सकें। किसी भी समाज का भविष्य अंततः उन युवाओं पर निर्भर करता है जो संतुलित, मानवीय और जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने वाले भी हों।

भारत में यहां तपती गर्मी में भी गिरती है बर्फ

मई-जून की भीषण गर्मी शुरू होते ही लोग ठंडी जगहों की तलाश में निकल पड़ते हैं। जब मैदानों में तापमान 45 डिग्री के पार पहुंच जाता है, तब हर किसी का मन करता है कि कहीं ऐसी जगह चला जाए जहां ठंडी हवाएं हों, पहाड़ हों और चारों तरफ बर्फ जमी हो। अच्छी बात यह है कि भारत में कई ऐसी खूबसूरत जगहें मौजूद हैं जहां गर्मियों के मौसम में भी बर्फ देखने को मिल जाती है। यही वजह है कि हर साल लाखों पर्यटक इन जगहों की ओर रुख करते हैं। इन जगहों की खास बात सिर्फ बर्फ नहीं, बल्कि यहां का प्राकृतिक सौंदर्य, एडवेंचर और शांत माहौल भी है। कहीं ऊंचे पहाड़ों के बीच सफेद चादर बिछी मिलती है, तो कहीं ग्लेशियर और जमी हुई झीलें लोगों को हैरान कर देती हैं। अगर आप भी इस गर्मी में कुछ अलग अनुभव करना चाहते हैं और बर्फ के बीच छुट्टियां बिताने का सपना देख रहे हैं, तो आज हम आपको भारत की कुछ ऐसी शानदार जगहों के बारे में बताएंगे, जहां मई-जून में भी बर्फ जमी रहती है और एक बार जाने के बाद आपका दिल बार-बार वहां लौटने का करेगा।

गुलमर्ग

मिनी स्विट्जरलैंड का अनुभव चाहिए तो गुलमर्ग जाइए। कश्मीर का गुलमर्ग अपनी खूबसूरती और बर्फीले नजारों के लिए दुनियाभर में मशहूर है। मई-जून में भी यहां की ऊंची चोटियों पर बर्फ देखने को मिल जाती है। गुलमर्ग गोंडोला राइड से बर्फ से ढके पहाड़ों का नजारा बेहद शानदार लगता है। यहां का मौसम गर्मियों में भी काफी ठंडा और सुकूनभरा रहता है।

औली

गर्मियों में भी ठंड का एहसास औली में मिल सकता है। उत्तराखंड का औली स्कीइंग के लिए मशहूर है, लेकिन गर्मियों में भी यहां की ठंडी वादियां और आसपास की बर्फ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। यहां से नंदा देवी पर्वत का नजारा बेहद शानदार दिखाई देता है। केबल कार की सवारी और हरियाली के बीच बर्फीली चोटियां देखने का अनुभव बेहद खास होता है।

लद्दाख

लद्दाख की खूबसूरती किसी जादू से कम नहीं लगती। यहां कई ऊंचे दर्रे और पहाड़ी इलाके ऐसे हैं जहां जून में भी बर्फ देखने को मिल जाती है। खासकर खारदुंग ला और चांग ला जैसे पास पर सफेद बर्फ की मोटी परत पर्यटकों को रोमांचित कर देती है। बाइक ट्रिप पसंद करने वालों के लिए यह जगह किसी सपने जैसी है।

रोहतांग पास और युमथांग घाटी

हिमाचल प्रदेश का रोहतांग पास गर्मियों में बर्फ देखने के लिए सबसे लोकप्रिय जगहों में से एक है। मनाली से करीब 50 किलोमीटर दूर स्थित यह जगह मई और जून में भी बर्फ से ढकी रहती है। यहां पर्यटक स्नो स्कूटर, स्कीइंग और बर्फ में खेलने का मजा लेते हैं। रास्ते में दिखने वाले पहाड़ और झरने इस सफर को और भी यादगार बना देते हैं। फूलों और बर्फ की जन्नत का आनंद उठाना है तो सिक्किम जाएं। सिक्किम की युमथांग वैली को फूलों की घाटी भी कहा जाता है। यहां मई-जून में भी कई इलाकों में बर्फ देखने को मिलती है। बर्फ से ढके पहाड़, रंग-बिरंगे फूल और ठंडी हवाएं इस जगह को बेहद खास बना देती हैं। प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए यह जगह किसी स्वर्ग से कम नहीं है।

हंसना मना है

एक व्यक्ति नदी में डूब रहा था, व्यक्ति- बचाओ गणेश जी बचाओ.. गणेश जी आये और नाचने लगे, व्यक्ति- आप नाच क्यों रहे हो? गणेश जी- तू भी मेरे विसर्जन में बहुत नाचता है।

डॉक्टर- अब क्या हाल है? मरीज- पहले से ज्यादा खराब है। डॉक्टर- दवाई खाली थी क्या? मरीज- नहीं दवाई की शीशी तो भरी हुई थी। डॉक्टर- मेरा मतलब दवाई लेली थी? मरीज- आप ने दी तो मैंने लेली। डॉक्टर- बेवकूफ दवाई पिली थी? मरीज- नहीं दवाई तो लाल थी। डॉक्टर-गधे दवाई को पीलिया था? मरीज- नहीं जी पीलिया तो मुझे था।

पिंकी बहुत तेजी से स्कुटी चला रही थी और उसने रेड लाइट क्रॉस कर दी.. ट्रैफिक पुलिस- चलो स्कुटी साइड में खड़ी करो, तुम्हारा चालान कटेगा। पिंकी- सर मुझे माफ कर दो पहली बार हुआ है। ट्रैफिक पुलिस- तुम्हें रेड लाइट नहीं दिखी थी क्या? पिंकी- दिखी तो थी पर आप नहीं दिखे, न जाने कहा छुप कर बैठे थे।

विणा अपने पति से- तुम सच में, बहुत सीधे साधे और भोले हो, तुम्हें कोई भी आसानी से बेवकूफ बना सकता है। पति-सच कह रही हो, शुरुवात तो तुम्हारे पापा ने ही की है।

कहानी | सफल लाइफ के लिए कोई भी शॉर्टकट नहीं

एक बार एक चिड़िया जंगल में अपने मीठे सुर में गाना गा रही थी। तभी उसके पास से एक किसान कीड़ों से भरा एक संदूक ले करके गुजरा। चिड़िया ने उस किसान को रोक कर पूछा - भाई तुम्हारे संदूक के अंदर क्या है और अभी तुम कहां जा रहे हो? किसान ने चिड़िया से कहा- इस संदूक में कीड़े हैं और वह बाजार से उन कीड़ों के बदले पंख खरीदेगा। इतना कहकर किसान बाजार की तरफ बढ़ने लगा। चिड़िया ने किसान का रास्ता रोकते हुए अनुरोध किया - पंख तो मेरे पास भी हैं। मुझे कीड़े तलाशने के लिये बहुत सफर करना पड़ता है, तुम मेरा एक पंख ले लो और बदले में मुझे कीड़े दे दो। इससे मुझे कीड़ों की तलाश के लिये बाहर नहीं जाना पड़ेगा। किसान ने चिड़िया को कीड़े दे दिए और ने बदले में उसका एक पंख तोड़कर ले लिया। उसके बाद रोज यही सिलसिला चलता रहा, और एक दिन ऐसा भी आया, जब उसके पास देने के लिए एक भी पंख नहीं बचा। वह उड़कर कीड़े तलाशने लायक भी नहीं रह गई थी। वह भद्दी भी दिखाने लगी, उसने अब गाना भी छोड़ दिखा। भोजन की तलाश करते-करते जल्दी ही वह मर गई।

कहानी से शिक्षा- दोस्तों यही बातें हमारी जिंदगी में भी लागू होती है। कई बार हम ऐसा रास्ता चुनते हैं जो हमें शुरूआती दौर में बहुत आसान लगता है पर वही रास्ता हमें आगे चलकर मुश्किल में डाल देता है। चिड़िया को भोजन हासिल करने का तरीका बहुत आसान लगा लेकिन आगे चलकर वही मुश्किल और नुकसानदेह तरीका साबित हुआ। लाइफ में ऐसा कोई भी शॉर्टकट नहीं है जो आपको तुरंत सफल बना दे अच्छा होगा कि आप लालच में न फंसे और आसान रास्ता रूपी सबसे खतरनाक रास्ते में अपने कदम न बढ़ाएं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। वरिष्ठ जन सहायता करेंगे। अप्रत्याशित लाभ होगा। यात्रा होगी। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। दूसरों से न उलझें।

वृषभ

अप्रत्याशित खर्च होंगे। तनाव रहेगा। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें। वस्तुएं संभालकर रखें। जोखिम न लें। नए संबंधों के प्रति सतर्क रहें। भूल करने से विरोधी बढ़ेंगे।

मिथुन

रुका हुआ धन मिल सकता है। निवेश शुभ रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोमांस में सफलता मिलेगी, प्रसन्नता रहेगी। व्यवसाय लाभप्रद रहेगा।

कर्क

वरिष्ठ जन सहायता करेंगे। रुके कार्यों में गति आएगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रोजगार बढ़ेगा। सतर्कता से कार्य करें। व्यापार में नए अनुबंध आज नहीं करें।

सिंह

तंत्र-मंत्र में रुचि बढ़ेगी। यात्रा मनोरंजक रहेगी। निवेश शुभ रहेगा। बाहरी सहायता से काम होंगे। ईश्वर में रुचि बढ़ेगी। कामकाज की अनुकूलता रहेगी।

कन्या

चोट व रोग से बचें। जल्दबाजी से हानि होगी। दूसरों पर विश्वास हानि देगा। कार्य में बाधा होगी। पत्नी से आश्वासन मिलेगा। स्वयं के निर्णय लाभप्रद रहेंगे।

तुला

आज घर-बाहर प्रसन्नता बनी रहेगी। भाई को वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। धनलाभ होगा। उपहार मिल सकता है।

वृश्चिक

संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रसन्नता बनी रहेगी। व्यापार में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धनु

पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी। धनार्जन होगा। रोजगार में उन्नति एवं लाभ की संभावना है।

मकर

धन को लेकर व्यावसायिक चिंता बनी रहेगी। संतान के व्यवहार से कष्ट होगा। दूर से शोक समाचार मिल सकता है। आज काम में मन नहीं लगेगा। विवाद से बचें।

कुम्भ

घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। कार्य पूर्ण होंगे। आय बढ़ेगी। मनोरंजक यात्रा होगी। प्रसन्नता रहेगी। सहयोगी मदद नहीं करेंगे। व्ययों में कटौती करने का प्रयास करें।

मीन

पुराने मित्र व संबंधी मिलेंगे। अच्छी खबर मिलेगी। प्रसन्नता रहेगी। जोखिम न लें। लाभ होगा। कार्यपद्धति में विश्वसनीयता बनाएं रखें। आर्थिक अनुकूलता रहेगी।

बॉलीवुड | जन्मदिन विशेष

अमरीश पुरी ने हर किरदार को अपनी मौजूदगी से यादगार बना दिया

पंजाब के नवांशहर में 22 जून 1932 को जन्में अमरीश पुरी ने अपने करियर की शुरुआत थिएटर से की थी। फिल्मों में आने से पहले उन्होंने कई साल तक नौकरी की। 80 के दशक में फिल्मों में आने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने बेहतरीन अभिनय और बुलंद आवाज से उन्होंने खलनायकों को हिंदी सिनेमा में एक खास पहचान दिलवाई। कभी किसी गुफा जैसे अड्डे में बैठकर दुनिया जीतने का सपना देखने वाला मोगैंबो, कभी रेगिस्तान की हवेली में आतंक का दूसरा नाम बना ठाकुर दुर्जन सिंह, तो कभी 'जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी' कहकर करोड़ों दिलों को भावुक कर देने वाला एक पिता। अमरीश पुरी सिर्फ एक अभिनेता नहीं थे, बल्कि भारतीय सिनेमा के उन चुनिंदे कलाकारों में से थे, जिन्होंने हर किरदार को अपनी मौजूदगी से यादगार बना दिया। उनकी गूंजती हुई आवाज, आंखों में उतरता खौफ और स्क्रीन पर छा जाने वाला व्यक्तित्व ऐसा था कि कई बार दर्शक फिल्म के हीरो से ज्यादा उनके किरदार को याद रखते थे। मोगैंबो भारतीय सिनेमा का शायद सबसे पॉपुलर विलेन है। अमरीश पुरी ने इस किरदार को जिस अंदाज में जिया, उसने उसे फिल्मी इतिहास का हिस्सा बना दिया। आज भी 'मोगैंबो खुश हुआ' सुनते ही सबसे पहले उनका चेहरा सामने आ जाता है। गदर में अमरीश पुरी ने एक ऐसे पिता का किरदार निभाया जो अपनी बेटी और अपने देश के बीच उलझा हुआ था। अशरफ अली पूरी तरह से खलनायक नहीं था, लेकिन कहानी में उसका विरोधी पक्ष इतना मजबूत था कि वह फिल्म के सबसे यादगार पात्रों में शामिल हो गया। रेगिस्तान की धूल, हवेली की ऊंची दीवारें और बदले की आग। करण अर्जुन का ठाकुर दुर्जन सिंह बेरहमी का दूसरा नाम था। 'डोंग इज नेवर रॉन्ग' कहने वाला जनरल डोंग 90 के दशक के सबसे मनोरंजक और पॉपुलर खलनायकों में से एक था। उसकी अजीबोगरीब हंसी, अतरंगी अंदाज और तानाशाह पर्सनालिटी ने उसे दर्शकों के बीच कल्ट स्टेटस दिलाया।

रश्मिका मंदाना ने कॉकटेल 2 का बीटीएस वीडियो किया शेयर

हाल ही में रिलीज हुई फिल्म कॉकटेल 2 में रश्मिका मंदाना, शाहिद कपूर और कृति सेनन की रोमांटिक केमिस्ट्री दर्शकों को देखने को मिल रही है। रश्मिका ने सोशल मीडिया पर फिल्म की शूटिंग के दौरान का एक बिहाइंड द सीन वीडियो शेयर किया है। यह फिल्म 19 जून, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। इसमें रश्मिका के साथ शाहिद कपूर और कृति सेनन भी मुख्य भूमिका में हैं। इस वीडियो में रश्मिका अपने किरदार दीया की तैयारी करती नजर आ रही हैं। वीडियो के साथ उन्होंने एक बेहद भावुक मैसेज भी लिखा। रश्मिका ने लिखा, हम हमेशा से सच्चे प्यार पर भरोसा करते आए हैं और हमने इसे जीकर भी दिखाया है। ढेर सारे प्यार के साथ विदा। आपकी, दीया रेड्डी और रश्मिका। रश्मिका की इस पोस्ट पर फिल्म की स्टाइलिस्ट अनाइता श्रॉफ अडाजानिया ने कमेंट किया, दीया रेड्डी का लुक शानदार था और रश्मिका ने मेरा दिल जीत लिया। वहीं रश्मिका के फैंस भी उनके इस किरदार पर जमकर प्यार लुटा रहे हैं। फिल्म कॉकटेल 2 साल 2012 में आई कॉकटेल का सीक्वल है। कॉकटेल में दीपिका पादुकोण, सैफ अली खान और डायना पेंटी ने मुख्य भूमिका निभाई थी। वहीं कॉकटेल 2 का निर्देशन होमी अदजानिया ने किया है। इसमें शाहिद कपूर कुणाल के रोल में, रश्मिका मंदाना दीया के रोल में और कृति सेनन एली के रोल में हैं। फिल्म कॉकटेल 2 एक ऐसे जोड़े की कहानी है, जो लंबे समय से साथ हैं, लेकिन उनकी जिंदगी में किसी तीसरे व्यक्ति के आने से रिश्ते में दूरियां आने लगती हैं। इस फिल्म को दिनेश विजान, लव रंजन और अंकुर गर्ग ने मिलकर बनाया है। शाहिद कपूर की पत्नी मीरा राजपूत को भी कॉकटेल 2 काफी पसंद आई।

लिखा- हम हमेशा से सच्चे प्यार पर भरोसा करते आए हैं

रणवीर सिंह बने भारत का सबसे महंगे एक्टर

ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक, रणवीर सिंह ने एक ही प्रोजेक्ट से करीब 325 करोड़ की कमाई की है, जो किसी भी भारतीय एक्टर के लिए अब तक की सबसे बड़ी रकम मानी जा रही है। रणवीर सिंह को यह बड़ी कमाई उनकी फिल्म 'धुरंधर' से हुई है। यह फिल्म दो पार्ट में रिलीज हुई थी और दोनों ही पार्ट्स ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया। इन दोनों फिल्मों ने मिलाकर दुनिया भर में करीब 3200 करोड़ का कलेक्शन किया, जिसमें से भारत में ही 1900 करोड़ से ज्यादा की कमाई हुई। बताया जा रहा है कि रणवीर ने इस फिल्म के लिए अपनी नोर्मल फीस नहीं ली थी। उन्होंने प्रॉफिट शेयरिंग मॉडल अपनाया था, यानी फिल्म के मुनाफे में हिस्सा लिया। इतना ही नहीं, जब फिल्म का बजट बढ़ गया तो उन्होंने खुद भी पैसे लगाए, जिससे उनका हिस्सा और बढ़ गया। थिएटर कलेक्शन, डिजिटल राइट्स, सैटेलाइट राइट्स और म्यूजिक राइट्स से हुई कमाई को मिलाकर रणवीर का हिस्सा करीब 325 करोड़ तक पहुंच गया। इससे पहले सबसे ज्यादा कमाई का रिकॉर्ड साउथ सुपरस्टार रजनीकांत के नाम था, जिन्होंने 2024 की फिल्म 'जेलर' से 250 करोड़ से ज्यादा कमाए थे। वहीं, अल्लू अर्जुन और प्रभास भी अपनी फिल्मों 'पुष्पा 2' और 'कल्कि 2898 एडी' से 200 करोड़ से ज्यादा कमा चुके हैं। बॉलीवुड में इससे पहले यह रिकॉर्ड शाहरुख खान के नाम था, जिन्होंने 2023 में 'पठान' और 'जवान' जैसी फिल्मों से करीब 200 करोड़ प्रति फिल्म कमाए थे। एक समय था जब किसी एक्टर का 10 करोड़ फीस लेना भी बड़ी बात होती थी। 90 के दशक में चिरंजीवी, कमल हासन और श्रीदेवी ऐसे स्टार्स थे, जिन्होंने पहली बार 1 करोड़ फीस ली थी। फिर धीरे-धीरे खान सुपरस्टार्स ने इस फीस को नई ऊंचाई पर पहुंचाया। और अब, 2026 में रणवीर सिंह ने 300 करोड़ का आंकड़ा पार कर इतिहास रच दिया है।

शाहरुख-रजनीकांत को छोड़ा पीछे, 'धुरंधर' फिल्म के लिए चार्ज किए 325 करोड़

दुनिया का सबसे छोटा देश, कदमों में खत्म हो जाता है सफर!

क्या आप भी घूमना पसंद करते हैं? अगर हां, तो अब तक कितनी जगहों की सैर कर चुके हैं? कितने देश और राज्य आपकी घूमने की लिस्ट में शामिल हो चुके हैं? दुनिया भर में कई जगह है जो अलग-अलग तरह से जानी जाती है। आज हम आपको एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं जो कदमों में खत्म हो जाता है। जी हां, दुनिया का सबसे छोटा देश है जो भारत की राजधानी दिल्ली के किसी मोहल्ले से भी छोटा हो सकता है। दूर-दूर से सैलानियां देश की खूबसूरती देखने आते हैं लेकिन फिर भी ये देश सबसे कम यात्रियों वाली जगह कहलाता है। हवाई अड्डा तक इतने पास है कि आप घूमते-फिरते मस्ती करते हुए अपने दोस्तों के साथ पैदल पहुंच सकते हैं। आइए आपको दुनिया के सबसे छोटे देश के बारे में विस्तार से बताते हैं। दरअसल, हम बात कर रहे हैं तुवालु की जिसे दुनिया का सबसे छोटा देश कहा जाता है। ये एक द्वीपीय देश है और ये सिर्फ 26 वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला हुआ है। तुवालु का नाम दुनिया के चौथा सबसे छोटे देश में आता है। प्रशांत महासागर में हवाई और ऑस्ट्रेलिया के बीच तुवालु नामक द्वीपीय देश स्थित है। यहां सिर्फ 12,373 लोगों की जनसंख्या है। ये देश देखने में बेहद खूबसूरत है लेकिन हैरानी की बात तो ये है कि यहां पर साल भर में सिर्फ 2 से 3 हजार यात्री ही आते हैं। नजदीक में हवाई अड्डा है और ये ही एकमात्र ऑप्शन है। हवाई मार्ग से यात्री तुवालु में आ सकते हैं। समुद्र के स्तर बढ़ने के कारण तुवालु गायब होने के लिए तैयार है। कहा जाता है कि तुवालु के 9 में से 2 द्वीप समुद्र के स्तर बढ़ने की वजह से डूब चुके हैं। तूफान के समय समुद्री लहरों के कारण तुवालु देशवासियों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ये कभी भी डूब सकता है और इस डर के साथ यहां लोग रह रहे हैं। शायद ये भी एक कारण है कि पर्यटकों की कमी भी यहां देखने को मिलती है।

अजब-गजब | यहां बनता है दुनिया का सबसे महंगा पनीर

80 हजार रुपये प्रति किग्रा है दाम!

आपने कितने रुपये तक का पनीर खरीदा है? शायद 250 ग्राम के लिए ज्यादा से ज्यादा 120, 150 या मान लेते हैं 200-250 रुपये खर्च किए होंगे। 1 किलो पनीर के लिए 500 या 600 तक खर्च किए होंगे? हालांकि, आज हम आपको जिस पनीर के बारे में बताने जा रहे है उसका एक टुकड़ा भी आपको इतने रुपये में नहीं मिल सकेगा। अपनी खासियत के चलते दुनिया में सबसे महंगा कहलाए जाने वाला पनीर अगर एक ग्राम भी खरीदने की सोचेंगे तो इसके लिए आपको अपनी जेब से 7500 रुपये निकालने पड़ सकते हैं।

आखिर ऐसा कौन सा पनीर है जो दुनियाभर में इतना महंगा है? शाकाहारी लोगों के लिए पनीर प्रोटीन का एक बेस्ट सोर्स माना जाता है। इसमें प्रोटीन के अलावा विटामिन बी, कैल्शियम और फास्फोरस जैसे पोषक तत्व मौजूद हैं। हम जिस महंगे पनीर की बात कर रहे हैं वो आमतौर पर बाजार में मिलने वाले पनीर से काफी खास है। इसकी कीमत के आगे आपको सोना सस्ता लग सकता है। दरअसल, हम जिस पनीर की बात कर रहे हैं वो पुले के नाम से जाना जाता है। गधी के दूध से बनने वाले इस पनीर की कीमत 78 हजार से 80 हजार रुपये प्रति किलोग्राम है। सर्बिया के जसाविका नेचर रिजर्व में ये पनीर तैयार किया जाता है जिसे बनाना बहुत मुश्किल है। इस दुर्लभ पनीर को तैयार करना कोई आसान काम नहीं है।

इसके लिए गधी का 25 लीटर दूध चाहिए होता है और वो उतनी आसानी से मिल नहीं पाती है। गधी एक दिन में 0.2 से 0.3 लीटर दूध देती है और 25 लीटर दूध के साथ 1 किलोग्राम पनीर तैयार किया जाता है, ये अपनी प्रक्रिया के चलते काफी महंगा बिकता है। हालांकि, सेहत के लिए गधी का दूध और पनीर दोनों ही काफी लाभकारी माना जाता है। पुले पनीर में उच्च मात्रा में प्रोटीन मौजूद होता है।

महाराष्ट्र में जारी है शिवेसना के दोनों गुटों में रार

दल-बदल के आरोपों पर तीखा पलटवार

» सांसद राउत बोले- एकनाथ शिंदे ने छह गद्दारों को जन्म दिया, सबका हिसाब होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में शिवेसना व शिवसेना यूबीटी के बीच रार खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। जहां संजय राउत ने एकनाथ शिंदे पर छह गद्दारों को जन्म देने का आरोप लगाया, क्योंकि शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के छह लोकसभा सांसदों ने शिंदे गुट में शामिल होकर उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी को औपचारिक रूप से विभाजित कर दिया। वहीं शिवसेना नेता निलेश राणे राउत को गटरछाप बता दिया। बता दें शिंदे ने इस दलबदल को ऑपरेशन टाइगर की सफलता और शिवसेना के विस्तार का दूसरा चरण बताते हुए महाराष्ट्र की राजनीति में अपनी पकड़ मजबूत करने का दावा किया है।

एक पोस्ट में राउत ने पार्टी के बागियों को गद्दार कहा। चीज़ों को ठीक से संभालने के लिए आगे सिजेरियन सर्जरी करनी पड़ेगी। उन्होंने पोस्ट में आरोप लगाया कि चित्रगुप्त ने उनके पापों का हिसाब-किताब शुरू कर दिया है! उनकी अगली पीढ़ी कहेगी मेरे पिता गद्दार थे, मेरे पति गद्दार थे, मेरे दादा गद्दार थे। बाद में, शिवसेना (यूबीटी) विधायकों की बैठक में पत्रकारों से बात करते हुए राउत ने शिंदे के खिलाफ अपनी आलोचना और तेज़ कर दी। उन्होंने कहा कि एकनाथ शिंदे ने छह गद्दारों को जन्म दिया है। चीज़ों को ठीक से संभालने के लिए आगे सिजेरियन सर्जरी करनी पड़ेगी।

छह बागी लोकसभा सदस्य एकनाथ के साथ

इससे पहले शिवसेना (उबाठा) के सभी छह बागी लोकसभा सदस्य सोमवार को मुंबई में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ शिवसेना में शामिल हो गए, जिससे उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी में औपचारिक रूप से विभाजन हो गया। नयी दिल्ली में शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) की संसदीय दल की एक अहम बैठक में शामिल न होने के पांच दिन बाद, शिंदे और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में एक कार्यक्रम में बागी सांसद शिवसेना में शामिल हुए। शिवसेना (उबाठा) संसदीय दल की बैठक में केवल तीन लोकसभा सदस्य शामिल हुए थे। पाला बदलने वाले शिवसेना (उबाठा) के लोकसभा सदस्य हैं- संजय देशमुख (यवतमाल), संजय जाधव (परभणी), संजय दीना पाटिल (मुंबई उत्तर पूर्व), नागेश पाटिल-आष्टीकर (हिंगोली), ओमप्रकाश राजे निंबालकर (धाराशिव) और भाऊसाहेब वाकचौरे (शिरडी)। उन्होंने 2024 के आम चुनावों में भाजपा और शिवसेना के उम्मीदवारों को हराया था। शिवसेना (उबाठा) ने 2024 के आम चुनाव में महाराष्ट्र में नौ लोकसभा सीटें जीती थीं।

राउत गटरछाप आदमी हैं: नीलेश नारायण

शिवसेना विधायक नीलेश नारायण राणे ने शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत पर तीखा हमला किया। उन्होंने बागी विधायकों के खिलाफ राउत के आरोपों को खारिज किया और उद्धव ठाकरे गुट के छह सांसदों के एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल होने के फैसले का बचाव किया। एएनआई से बात करते हुए, राणे ने राउत के उन दावों पर सवाल उठाए कि पाला बदलने की प्रक्रिया में पैसों का लेन-देन हुआ था और उन्हें सबूत पेश करने की चुनौती दी। राणे ने कहा कि संजय राउत जो कहते हैं, उसे इतना महत्व न दें। क्या उनके पास कोई सबूत है? वे किस आधार पर कह रहे हैं कि पैसे लिए गए? क्या आप हवाला में शामिल थे?... मैं उनके सवालों का जवाब क्यों दूं? वे गटर-छाप किस्म के आदमी हैं। यह बयान तब आया जब राउत ने धाराशिव के सांसद ओमराजे निंबालकर समेत कई बागी सांसदों पर शिवसेना की विचारधारा से गद्दारी करने का आरोप लगाया और कहा कि दल बदलने के पीछे पैसों का लालच था। राउत ने दावा किया था कि शिवसेना को तोड़ना महाराष्ट्र को बांटने जैसा है और आरोप लगाया कि निंबालकर को पाला बदलने के लिए पैसे मिले थे।

कांग्रेस पार्टी के खिलाफ साजिश की बात बीजेपी फैला रही: नटराजन

» राज्यसभा का नॉमिनेशन रद्द करवाने में कांग्रेस की साजिश की बातों को कांग्रेस नेता ने नकारा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मिनाक्षी नटराजन ने कहा कि अगर कोई साजिश है भी तो किन वजहों से दो रिटर्निंग अधिकारियों ने मामूली आधार पर नॉमिनेशन रद्द कर दिया? असल में देश में लोकतंत्र को कमजोर करने की साजिश चल रही नई दिल्ली। बीजेपी ने मीनाक्षी नटराजन का राज्यसभ नॉमिनेशन रद्द होने को लेकर कांग्रेस पर साजिश का आरोप लगाया था। इस पर अब नटराजन ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने भाजपा के आरोपों पर पलटवार करते हुए राज्यसभा सीट को लेकर किसी भी साजिश से इनकार किया है। साथ ही कहा है कि दो रिटर्निंग अधिकारियों ने उनका विरोध किया है. इसके अलावा लोकतंत्र के सिद्धांतों का हवाला देकर उन्होंने बीजेपी पर निशाना साधा। नटराजन ने जानकारी देते हुए कहा कि कोई साजिश नहीं है।

कांग्रेस पार्टी के खिलाफ साजिश की बात बीजेपी फैला रही है। इससे हमारा उस साजिश से हटाया जा सके, जो वे देश के लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ रच रहे हैं। नटराजन ने कहा कि अगर कोई साजिश है भी तो किन वजहों से दो रिटर्निंग अधिकारियों ने मामूली आधार पर नॉमिनेशन रद्द कर दिया? असल में देश में लोकतंत्र को कमजोर करने की साजिश चल रही है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उनके पास राज्यसभा की तीसरी सीट के लिए जरूरी संख्या से दस कम सदस्य थे। तब भी वह कुछ न कुछ दाखिल कर रहे थे।

मानव सुथार ने काउंटी चैंपियनशिप में बिखेरा जलवा

» पहली बार एक पारी में झटके पांच विकेट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

टॉनटन। भारतीय क्रिकेट के उभरते हुए स्पिनर मानव सुथार ने इंग्लिश काउंटी चैंपियनशिप में अपनी फिरकी का दम दिखाया। सुथार ने वारविकशायर के लिए खेलते हुए पहली बार एक पारी में पांच विकेट लेने का कारनामा किया है। समरसेट के खिलाफ चल रहे इस मुकाबले में सुथार ने मैच में कुल सात विकेट चटकाए। वारविकशायरके लिए केवल दो मैच खेलने के अनुबंध पर आए सुथार ने समरसेट की दूसरी पारी में शानदार गेंदबाजी की। उन्होंने 46.5 ओवरों में 100 रन देकर पांच विकेट अपने नाम किए। वहीं, पहली पारी में उन्होंने 18 ओवरों में 50 रन देकर दो विकेट लिए थे।

यह सुथार का दूसरा काउंटी मैच है। इससे पहले यॉर्कशायर के खिलाफ अपने काउंटी डेब्यू मैच में उन्होंने दोनों पारी मिलाकर कुल चार विकेट झटके थे। इसी महीने अफगानिस्तान के खिलाफ अपने टेस्ट डेब्यू में सात विकेट लेकर सनसनी मचाने वाले सुथार को भारतीय टेस्ट टीम का भविष्य का फ्रंटलाइन स्पिनर माना जा रहा है। उन्होंने अपने इस संक्षिप्त काउंटी दौरे का अंत दो मैचों में 11 विकेटों के साथ किया। सुथार ने दूसरी पारी में सबसे पहले जॉर्डन हरमन (34) को स्लॉग स्वीप खेलने के प्रयास में डीप में कैच आउट कराया। इसके बाद टॉम कोहलर-कैडमोर (12) को स्टंप्स कराया। नाइट-वॉचमैन जोश शॉ (22) को सुथार ने अपनी फिरकी पर गच्चा दिया और गेंद उनके बल्ले का बाहरी किनारा लेती हुई स्लिप में चली गई। बाद में पुछल्ले बल्लेबाजों को समेटकर सुथार ने काउंटी क्रिकेट में पहली बार फाइव विकेट हॉल पूरा किया।

हिटमैन ने सचिन-गावस्कर और सहवाग को छोड़ा पीछे

नईदिल्ली। भारत के दिग्गज ओपनर रोहित शर्मा 39 साल की उम्र में भी बड़े बड़े रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं। अफगानिस्तान के खिलाफ चेन्नई में खेले गए तीसरे और अंतिम वनडे में पूर्व भारतीय कप्तान ने एक बार फिर इतिहास रच दिया। 79 रन की शानदार पारी खेलते हुए उन्होंने न सिर्फ भारत को आसान जीत दिलाई, बल्कि भारतीय क्रिकेट के कुछ सबसे बड़े नामों को पीछे छोड़ते हुए एक नया कीर्तिमान भी अपने नाम कर लिया। इस पारी के दौरान रोहित शर्मा ने वीरेंद्र सहवाग का बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया। वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले ओपनर बन गए हैं। इस उपलब्धि के साथ रोहित ने भारतीय क्रिकेट के तीन महान ओपनरों, सहवाग, सचिन तेंदुलकर और सुनील गावस्कर को पीछे छोड़ दिया है। रोहित शर्मा ने एक और खास रिकॉर्ड अपने नाम किया। 39 वर्ष और 51 दिन की उम्र में अर्धशतक लगाकर वह वनडे क्रिकेट में भारत के लिए सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गए हैं जिन्होंने पचास से ज्यादा रन की पारी खेली हो। इससे पहले यह रिकॉर्ड मोहिंदर अमरनाथ के नाम था, जिन्होंने 1989 में पाकिस्तान के खिलाफ 39 वर्ष और 21 दिन की उम्र में 88 रन बनाए थे।

पीएम इवेंट मैनेजमेंट व मार्केटिंग में माहिर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंदौर। पूर्व मुख्यमंत्री एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह अपने बयानों को लेकर अक्सर सुर्खियों में रहते हैं। एक बार फिर इंदौर दौरे के दौरान उन्होंने राम मंदिर में कथित भ्रष्टाचार, नीट परीक्षा और अन्य समसामयिक मुद्दों पर अपनी बात रखी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और योग कार्यक्रमों को लेकर उन्होंने कहा कि योग करना अच्छी बात है, लेकिन सड़कों पर योग करने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इवेंट मैनेजमेंट और मार्केटिंग में माहिर बताते हुए कहा कि वे इस तरह के आयोजनों को बड़े स्तर पर प्रस्तुत करते हैं।

वहीं संजय राउत और विभिन्न राजनीतिक संगठनों में हो रही टूट-फूट को लेकर उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अलग-अलग संगठनों को तोड़ा जा रहा है, वह लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय है। उन्होंने आरोप लगाया कि देश में लोकतांत्रिक मूल्यों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। फिलहाल दिग्विजय सिंह के इन बयानों के बाद राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है और माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में भाजपा की ओर से भी इस पर प्रतिक्रिया सामने आ सकती है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि री नीट परीक्षा संपन्न होना अच्छी बात है और इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री इस मामले में असफल रहे हैं। फिलहाल परीक्षा को लेकर कोई शिकायत सामने नहीं आई है लेकिन पिछली परीक्षा में भी कुछ दिनों बाद पेपर लीक होने की बात सामने आई थी। उन्होंने कहा कि अभी कुछ दिन इंतजार कर लेना चाहिए, उसके बाद स्थिति स्पष्ट होगी। पेपर लीक के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि विभिन्न परीक्षाओं में अलग-अलग तरीकों से पेपर लीक होने के मामले सामने आते रहे हैं। अब देखना होगा कि आगे क्या स्थिति बनती है। उन्होंने आरोप लगाया कि मंदिर से जुड़े कुछ लोगों पर जमीन खरीदने और अन्य मामलों में भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। उनका कहना था कि जिन लोगों पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं, उन्हें तत्काल पद से हटाया जाना चाहिए और मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

» दिग्विजय बोले- राम मंदिर में कथित भ्रष्टाचार के दोषियों को पद से हटाया जाए

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दौरे पर सांसद

» शशि थरूर की अगुवाई वाली समिति में ओवैसी, अरुण गोविल भी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद शशि थरूर की अगुवाई में विदेश मामलों की स्टैंडिंग कमेटी जम्मू और कश्मीर और लद्दाख के दौरे पर है। थरूर की इस टीम में एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी और बीजेपी सांसद अरुण गोविल भी शामिल हैं। सांसदों का यह चार दिवसीय दौरा भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन संबंधों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

सांसदों की यह टीम सोमवार से ही जम्मू और कश्मीर में है। थरूर कांग्रेस सरकार में विदेश राज्य मंत्री भी रह चुके हैं और वे संयुक्त राष्ट्र में राजनियक के तौर पर भी बड़ी भूमिका निभा चुके हैं।

रेखा सरकार 16 महीनों में हर मोर्चे पर विफल: नरेश कुमार

» कांग्रेस ने भाजपर सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. नरेश कुमार ने भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर पिछले 16 महीनों में जनकल्याण के मोर्चे पर विफल रहने का आरोप लगाया है। उन्होंने सरकार से 16 महीने का श्वेत पत्र जारी करने की मांग की। डॉ. कुमार ने कहा कि 21 फरवरी 25 को रेखा गुप्ता ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। 16 महीने बाद भी चुनावी संकल्प पत्र के वादे अधूरे हैं। महिलाओं को 2500 रुपये महीना और गर्भवती महिलाओं को 21 हजार रुपये की आर्थिक सहायता का वादा पूरा नहीं हुआ।

उन्होंने कहा कि किसानों के लिए कृषि भूमि का सर्किल रेट बढ़ाने, खेल सुविधाएं देने और युवाओं को रोजगार देने जैसे वादों पर भी ठोस प्रगति नहीं दिखी। पिछले 16 महीनों में न कोई नया स्कूल खुला, न कोई नया कॉलेज बना। अनधिकृत कॉलोनियों के लिए केवल पीएम-उदय योजना के तहत प्लॉट नियमित करने की बात हुई, कॉलोनियों को नियमित करने की दिशा में बड़ा कदम नहीं उठा। डॉ. कुमार ने आरोप लगाया कि आज दिल्ली में विकास की आवाज के बजाय बुलडोजर और मकान टूटने की आवाज सुनाई दे रही है।

भरत तिवारी एनकाउंटर पर बिहार में भूचाल

सीएम सम्राट पर विपक्ष के साथ सहयोगी भी उठा रहे सवाल

» जेडीयू बोली- तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष निष्कर्ष सामने आएगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के भोजपुर के भरत तिवारी एनकाउंटर मामले पर पूरे राज्य में घमासान मच गया। भाजपा सरकार के सीएम सम्राट चौधरी पर जहां विपक्ष का प्रहार जारी है वहीं उनकी सहयोगी पार्टी जदयू के साथ उनकी ही पार्टी के कई नेताओं ने उनकी कार्यशैली पर निशाना साधा है। आपको बता दें केस की जांच जारी है। एनकाउंटर करने वाले पुलिस पदाधिकारी सवालों के घेरे में हैं। बीजेपी के नेता तक इस मामले पर फायर हैं। इन सबके बीच मंगलवार (23 जून, 026) को बिहार के सीएम सम्राट चौधरी से पत्रकारों ने इस मामले को लेकर सवाल किया। सवाल पूछा गया तो मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने चुप्पी साध ली। उन्होंने एक शब्द तक नहीं कहा। सम्राट चौधरी श्याम प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर पटना स्थित पार्टी कार्यालय पहुंच थे।

मीडिया ने सवाल किया कि सर एनकाउंटर मामले पर बोल दीजिए, भरत तिवारी पर बोल दीजिए, इस मामले में जातिवाद का आरोप लग रहा है, बीजेपी के नेताओं ने ही सवाल उठाया है. इतने सवाल के बाद भी सीएम सम्राट चौधरी ने एक लाइन जवाब देना जरूरी नहीं समझा।

एडीजी के अनुसार, मुठभेड़ से संबंधित परिस्थितियों की जांच के लिए आधुनिक फॉरेंसिक तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों का उपयोग किया जा रहा है. जांच में फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल) विश्लेषण, तकनीकी और डिजिटल साक्ष्यों की जांच, भौतिक साक्ष्यों का संग्रह और सत्यापन, और उपलब्ध वीडियो फुटेज और अन्य सामग्रियों की जांच शामिल है. पुलिस मुख्यालय जांच की प्रगति पर लगातार नजर रख रहा है। इससे पहले जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद संजय झा ने भी भरत तिवारी एनकाउंटर पर सवाल उठाए थे। उन्होंने कहा था कि भरत तिवारी एनकाउंटर मामले में जो वीडियो सामने आया है, वह निश्चित रूप से संदेह पैदा करता है। राज्य सरकार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार पुलिसकर्मियों को निलंबित किया है, लेकिन वह काफी नहीं है। सीनियर पदाधिकारी द्वारा इस मामले की समयबद्ध जांच करवा कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। सरकार जब यह कहती है कोई भी अपराधी बचेगा नहीं, तो यह सिर्फ अपराधियों के लिए नहीं होता है। अगर पुलिसकर्मी भी कोई अपराध करता है, तो वह भी बचना नहीं चाहिए, उसके खिलाफ भी कार्रवाई होनी चाहिए।

कमजोरों की आवाज बने तो जान गंवानी पड़ी :अश्विनी

पूर्व केंद्रीय मंत्री चौबे ने कहा कि भरत भूषण तिवारी पर कभी कोई गंभीर आपराधिक मामला दर्ज नहीं हुआ था। उन्होंने दावा किया कि तिवारी समाज के कमजोर वर्गों की आवाज उठाते थे और इसी संघर्ष के दौरान उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ी। चौबे ने कहा कि भरत तिवारी गरीबों के हक की लड़ाई लड़ रहे थे। बाढ़ पीड़ितों, भूमिहीनों और वंचित वर्गों के लिए संघर्ष करते-करते उन्होंने अपनी जान दे दी। अश्विनी कुमार चौबे ने आरोप लगाया कि पुलिस का व्यवहार ऐसा था मानो

तिवारी कोई बड़ा अपराधी, नक्सली, उग्रवादी या डकैत हों। उन्होंने कहा कि तिवारी के घर बार-बार पुलिस बल भेजा जाता था, जिससे उन पर और उनके परिवार पर मानसिक दबाव बढ़ रहा था। उनके पिता पुलिस विभाग में हवलदार रहे थे और सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्त हुए थे। इसके बावजूद जिस तरह पुलिस का काफिला उनके घर पहुंचता था, उससे परिवार परेशान और विचलित हो जाता था। घटना वाले दिन भरत तिवारी घर से निकलकर एक गरीब बस्ती में चापाकल लगवाने के काम से गए थे। भरत तिवारी ने आत्मसमर्पण कर दिया था, लेकिन इसके बावजूद उनकी नृशंस हत्या कर दी गई।

मंत्री अशोक चौधरी ने सीधे हत्या बताया

वहीं बिहार सरकार में छुष्ठ कोटे से मंत्री अशोक चौधरी ने इसे सीधे हत्या बताया था। उन्होंने कहा था कि पुलिस ने इस मामले में गलत किया। पुलिस को विपरीत हालात को कंट्रोल करने की ट्रेनिंग दी जाती है। रंगदार और अपराधियों से पुलिस एनकाउंटर कर सकती है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं होता कि जिसे दिल करे उसे ही गोली मार दी। ऐसे पुलिसवालों के खिलाफ तो हत्या का केस चलना चाहिए। इसके अलावा मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने भी भरत तिवारी के एनकाउंटर पर सवाल उठाए थे।

इस मामले में कोर्ट के निर्देशों का पालन करेगी सरकार : राजीव

भरत तिवारी के एनकाउंटर मामले पर नीतीश कुमार की पार्टी का बड़ा बयान आया है। जेडीयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने भरत तिवारी के एनकाउंटर के मुद्दे पर कहा कि बिहार सरकार न्यायालय के निर्देशों का पूरी तरह पालन करेगी।राजीव रंजन ने कहा, भरत तिवारी एनकाउंटर मामला फिलहाल अदालत में लंबित है... मामले में पुलिस की भूमिका पर सवाल उठाए गए थे, इसलिए मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पूरे प्रकरण की न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं, ताकि तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष निष्कर्ष सामने आ सके।

यूपी-दिल्ली में भी जल्द दस्तक देगी बारिश

» मॉनसून की मुंबई में धमाकेदार एंट्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मॉनसून करीब एक हफ्ते की देरी के बाद महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई पहुंच गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, 23 जून को दक्षिण-पश्चिम मॉनसून मुंबई सहित महाराष्ट्र, तेलंगाना और ओडिशा के बाकी हिस्सों, और छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार के कुछ और इलाकों में आगे बढ़ गया है. अगले 2-3 दिनों में मॉनसून के उत्तर अरब सागर और गुजरात के कुछ हिस्सों, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के कुछ और इलाकों और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ने के लिए हालात अनुकूल हैं।

इसके बाद के 3-4 दिनों में यह झारखंड और बिहार के बाकी हिस्सों और उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में भी आगे बढ़ सकता है। अलनीनो के प्रभाव में कमजोर मॉनसून का असर दिखाई दे रहा है। मॉनसून में 1 से 22 जून के बीच देश में बारिश की कमी बढ़कर 43 फीसदी हो गई है। इस साल कमजोर मॉनसून का प्रभाव पर दिखने लगा है। भारत मौसम विभाग की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, जून के पहले तीन हफ्तों में अब तक देश में औसत से काफी कम बारिश रिकॉर्ड की गई है। मौसम के पूर्वानुमान में भारत मौसम विभाग ने कहा है कि आमतौर जून के 22 दिनों के बीच देश में औसतन 1०6 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड होती है, लेकिन इस साल इस अवधि में सिर्फ 6०.6 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई है।

अमोनिया रिसाव से 9 महिला मजदूरों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के तिरुवल्लुर जिले में एक प्राइवेट सीफ़ूड प्रोसेसिंग और एक्सपोर्ट फ़ैसिलिटी में अमोनिया गैस लीक होने से मरने वालों की संख्या मंगलवार को बढ़कर नौ हो गई। ज़हरीली गैस का यह रिसाव 21 जून को रूटीन इंडस्ट्रियल कामकाज के दौरान हुआ था और मरने वाले सभी लोग महिलाएं थीं। हेल्थ डिपार्टमेंट ने बताया कि 69 लोगों को अस्पतालों में भर्ती कराया गया था और उनकी हालत पर बारीकी से नज़र रखी जा रही है।

डिपार्टमेंट ने कहा कि लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रभावित इलाके की निगरानी और जांच भी की जा रही है, जबकि ज़िला प्रशासन और हेल्थकेयर संस्थान इलाज, निगरानी और रिस्पॉन्स से जुड़े कामों में तालमेल बिठा रहे हैं। विभाग के अनुसार, मरने वाली महिलाओं में से सात ओडिशा की और दो असम की थीं। मरने वालों में से आठ की पहचान शिबानी, जुमानी जुआंग, गीता जुआंगा, पूर्णिमा जुआंगा, चंपावती जुआंगा, पार्वती जुआंगा, सीता हांसदा और अंजीता सोरेन के तौर पर हुई, जबकि एक व्यक्ति की पहचान अभी नहीं हो पाई थी। यह रिसाव पेरियापालयम के पास कनिगईपायर/मंजुंगारनाई इलाके में मौजूद एक फ़ैसिलिटी में हुआ। प्रभावित लोगों को

» फैक्ट्री की सुरक्षा व्यवस्था पर उठे गंभीर सवाल

अमोनिया गैस अंदर जाने के गंभीर लक्षणों के साथ अस्पतालों में भर्ती कराया गया; इन लक्षणों में बहुत ज़्यादा सांस लेने में तकलीफ़, खांसी, सीने में बेचैनी और आंखों व सांस की नली में जलन शामिल थी। भर्ती किए गए लोगों में से 27 का इलाज वेल्स हॉस्पिटल में, 18 का वेंकटेश्वर हॉस्पिटल में, 11 का राजीव गांधी गवर्नमेंट जनरल हॉस्पिटल में और 13 का स्टेनली मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में चल रहा था। दो अन्य लोगों को पहले ही छुट्टी दी जा चुकी थी। हादसे की असल वजह की जांच की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि वह स्थिति पर बारीकी से नज़र रखना जारी रखेगा और सभी प्रभावित लोगों के लिए सही मेडिकल देखभाल सुनिश्चित करेगा।

कांग्रेस संगठन में होंगे बड़े फेरबदल, चार महासचिवों की होगी छुट्टी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस संगठन में बड़े फेरबदल की खबर है। कई राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष और एआईसीसी में बदलाव की आहट तेज हो गई है। यह बदलाव आगामी चुनाव को देखते हुए पार्टी को मजबूत करने के लिए किए जा रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, चार महासचिवों की छुट्टी हो सकती है।

इसके अलावा तीन से 4 राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष भी बदले जा सकते हैं। 6 से 7 राज्यों के प्रदेश प्रभारी हटाए जाएंगे। करीब 26 राष्ट्रीय सचिवों की छुट्टी होगी, अभी 62 राष्ट्रीय सचिव हैं। सूत्रों के मुताबिक, हरियाणा प्रभारी बीके हरिप्रसाद, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश चेन्नितथला, छत्तीसगढ़ प्रभारी सचिन पायलट, तमिलनाडु प्रभारी गिरीश चोडंकर, राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा हटाए जाएंगे।

तमिलनाडु अपनी नीति पर अटल : विजय

» नीट और हिंदी थोपने पर सीएम की दो टूक

» विधानसभा में विपक्ष पर बरसे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने उन आलोचकों को करारा जवाब दिया है जिन्होंने उनकी पार्टी तमिलगा वेट्री कझगम (टीवीके) को एक्टर की पार्टी कहा है। मंगलवार सुबह विधानसभा में दिए भाषण में उन्होंने अप्रैल-मई के चुनावों में टीवीके की सफलता की ओर इशारा करते हुए आलोचकों को याद दिलाया कि उनकी पार्टी कितनी सफल रही है। अपने दमदार भाषण में उन्होंने कई मुद्दों पर बात की - जैसे केंद्र सरकार का गैर-हिंदी भाषी राज्यों पर हिंदी थोपना और नीट को खत्म करने की मांग।

उन्होंने टीवीके की राजनीतिक ताकत और अपनी प्रशासनिक समझ पर शक करने वालों और आलोचना करने वालों को आड़े हाथों लिया। विजय ने विधानसभा को याद दिलाया कि उनकी पार्टी ने साजिशों और पाबंदियों का सामना किया है और न तो पार्टी और न ही उनका खुद का इरादा कभी खत्म होने का है। उन्होंने कहा कि हमें आसानी से सत्ता नहीं मिली। सिर्फ़ हम ही जानते हैं कि तमिल लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिए हमने कितना संघर्ष किया है... कुछ लोग ऐसा दिखावा करते हैं जैसे वे समझते नहीं हैं और हमारी आलोचना करते हुए कहते हैं, वह तो बस एक एक्टर है और पार्टी भी बस एक एक्टर की पार्टी है।

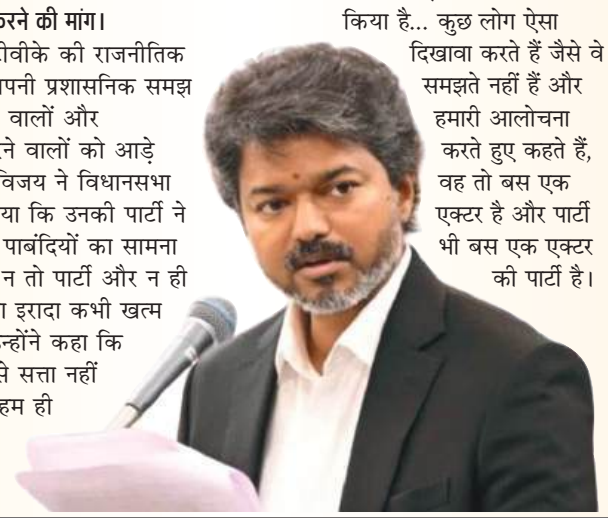

आलोचनाओं की परवाह नहीं करते

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि हम ऐसी आलोचनाओं की परवाह नहीं करते। हमारी राजनीति साफ़-सुथरी है। हमें 35 प्रतिशत वोट मिले। कुछ लोग कहते हैं कि हम बहुत आसानी से सत्ता में आ गए... लेकिन हमने साजिशों और पाबंदियों का सामना किया। हमने हर चीज़ का सामना किया... और आज हम यहाँ हैं। अभी लंबा सफ़र तय करना बाकी है। (नेशनल एंट्रेंस-एलिजिबिलिटी टेस्ट) - जो देश में मेडिकल कोर्स में एडमिशन के लिए एक ही क्वालिफाइंग एग्ज़ाम है - पर चल रहे विवाद पर विजय ने कहा कि यह सिस्टम असमानता पैदा करता है और उन्होंने इसे खत्म करने की मांग की। विधानसभा में कहा कि हालांकि उनकी पार्टी ने द्रविड़ राजनीति के जनक माने जाने वाले पेरियार ई.वी. रामासामी के व्यापक सामाजिक सिद्धांतों को अपनाया है, लेकिन वे नास्तिकता और धार्मिक मान्यताओं को नकारे जाने के उनके विचारों से सहमत नहीं हैं। पेरियार की तर्कवादी सोच और अपनी पार्टी के रुख के बीच अंतर बताते हुए विजय ने कहा कि हमने धार्मिक मान्यताओं को नकारे जाने के पेरियार के विचार को स्वीकार नहीं किया, लेकिन उनके व्यापक सिद्धांतों को पूरी तरह अपनाया। हमने पेरियार की शिक्षाओं को तो अपनाया, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि हम ईश्वर में विश्वास रखते हैं। हमने हमेशा यह साफ किया है कि हम किसी की विचारधारा के विरोधी नहीं हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा